संप्रति त्वाभोगध्रुवयोर्मध्ये मेलायको धातोः प्रयोगः कुत्रापि न दृश्यते। अत एव तस्य त्यागे न प्रबन्धावयवो धातुः। स त्रिधेति गीतप्रकाशकारेणोक्तं। उद्ग्राहध्रुवाभोगरूपेण त्रिधेति भावः। तदुक्तं शिरोमणौ। उद्ग्राहः प्रथमः पादः कथितः पूर्वसूरिभिः। ध्रुवत्वाच्च ध्रुवो मध्ये आभोगश्चान्तिमो मतः॥ तत् तु हरिनायकेनोक्तं। ध्रुवाभोगान्तरे ज्ञातो धातुरन्योऽन्तराभिधः॥ तस्यापीदानीं क्वापि प्रयोगो न दृश्यते॥ Certant igitur invicem musici et metrici, quam ob caussam cum scholiastis ध्रुवं पदं semper dicam eam distichi partem, quae identidem recurrit, *udgrâham* priorem et simpliciter exhibebo distichorum schemata:

A. *Morae quaternae.*

Cant. 1. *a.* ⏑⏑⏑⏑ | –⏑⏑ | –⏑⏑ | –⏑⏑ | – – |

b. ⏑⏑⏑⏑ | –⏑⏑ | –⏑⏑ | – – |

ध्रु-प०. *c.* –⏑⏑ | ⏑⏑– | ⏑⏑– | – |

d. ⏑⏑⏑⏑ | –⏑⏑ | – |

Udgrâha igitur est dactylicus catalecticus, dhruvapada partim anapaesticus acatalecticus, partim dactylicus acatalecticus.

Cant. 2. *a.* ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | –⏑⏑ |

b. ⏑⏑ ‖ –⏑⏑ | – |

c. ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | – – |

ध्रु-प०. *d.* ⏑⏑⏑⏑ | –⏑⏑ | – | Dactylicus iterum est versus.

Cant. 3. *a.* ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | – – |

b. ⏑⏑ – | ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | – – |

ध्रु-प०. *c.* ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | – – |

d. –⏑⏑ | ⏑⏑⏑⏑ | –⏑⏑ | –⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | – ⏑⏑ | – – ‖ Etiam hoc carmen dactylicum est. De versu I, 30, *a.* cf. supra.

Cant. 4. *a.* et *b.* ut in cant. 3. Dhruvapada hanc praebet formam:

c. ⏑⏑⏑⏑ | – ⏑⏑ | –⏑⏑ | – |

d. ⏑ ‖ –⏑⏑ | ⏑⏑⏑⏑ | –⏑⏑ | – |

Cant. 5. *a.* et *b.* consentiunt cum 3. Dhruvapada hanc habet varietatem:

c. – – | ⏑⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | – – |

d. ⏑⏑⏑ | –⏑⏑ | ⏑⏑⏑ | – – ‖ De versu 4, *b.* cf. supra.

Cant. 6. Udgrâha ut in praecc. Semel tamen occurrit anapaestus prima sede hem. *b.* (18, *b.*). Dhruvapada est: